वैज्ञानिक विधि से करें मेंथा की खेती

पंकज कुमार[1] एवं शुभम सिंह यादव[2]
सहायक प्राध्यापक, श्री रामस्वरूप मेमोरियल विश्वविद्यालय बाराबंकी, उत्तर प्रदेश
प्रयोगशाला तकनोशियन, श्री रामस्वरूप मेमोरियल विश्वविद्यालय बाराबंकी, उत्तर प्रदेश

मेंथा की खेती बदायूं, रामपुर, मुरादाबाद, बरेली, पीलीभीत, बाराबंकी, फैजाबाद, अम्बेडकर नगर, लखनऊ आदि जिलों में किसानों द्वारा बड़े पैमाने पर की जाती है। विगत कुछ वर्षों से मेंथा इन जिलों में जायद की प्रमुख फसल के रूप में अपना स्थान बना रही है। इसके तेल का उपयोग सुगन्ध के लिए व औषधि बनाने में किया जाता है।

भूमि एवं भूमि की तैयारी–

मेंथा की खेती क लिए पर्याप्त जीवांश अच्छी जल निकास वाली पी०एच० मान 6–7.5 वाली बलुई दोमट व मटियारी दोमट भूमि उपयुक्त रहती है। खेत की अच्छी तरह से जुताई करके भूमि को समतल बना लेते हैं। मेंथा की रोपाई के तुरन्त बाद में खेत में हल्का पानी लगाते हैं जिसके कारण मेन्था की पौध ठीक लग जाये।

संस्तुत प्रजातियाँ–

- मेन्था स्पाइकाटा एम०एस०एस०–1 (देशी पोदीना)
- कोसा (समय व देर से रोपाई हेतु उत्तम) (जापानी पोदीना)
- हिमालय गोमती (एम०ए०एच०–9)
- एम०एस०एस०–1 एच०वाई–77
- मेन्था पिप्रेटा–कुकरैल

मेन्था की जड़ों को लगाने का समय–

मेन्था की जड़ों की बुवाई अगस्त माह में नर्सरी में कर देते हैं। नर्सरी को ऊँचे स्थान में बनाते है ताकि इसे जलभराव से रोका जा सके। अधिक वर्षा हो जाने पर जल का निकास करना चाहिए।

बुवाई–रोपाई का समय

समय से मेन्था की जड़ों की बुवाई का उचित समय 15 जनवरी से 15 फरवरी है। देर से बुवाई करने पर तेल की मात्रा कम हो जाती है व कम उपज मिलती है। देर बुवाई हेतु पौधों को नर्सरी में तैयार करके मार्च से अप्रैल के प्रथम सप्ताह तक खेत में पौधों की रोपाई अवश्य कर देना चाहिए। विलम्ब से मेंथा की खेती के लिए कोसी प्रजाति का चुनाव करें।

भूस्तरियों (सकर्स) का शोधन–

रोपाई के पूर्व भूस्तरियों को 2 ग्राम कार्बेन्डाजिम प्रति लीटर पानी के घोल बनाकर 5 मिनट तक डुबोकर शोधित करना चाहिए।

बुवाई की विधि–

जापानी मेंथा की रोपाई के लिए लाइन की दूरी 30–40 सेमी० देशी पोदीना 45–60 सेमी० तथा जापानी पोदीना में पौधों से पौधों की दूरी 15 सेमी० रखना चाहिए। जड़ों की रोपाई 3 से 5 सेमी० की गहराई पर कूंड़ों में करना चाहिए। रोपाई के तुरन्त बाद हल्की सिंचाई कर देनी चाहिए। बुवाईध्रोपाई हेतु 4–5 कुन्तल जड़ों के 8–10 सेमी० के टुकड़े उपयुक्त होते हैं।

उर्वरक की मात्रा–

सामान्यतः उर्वरकों का प्रयोग मृदा परीक्षण की

संस्तुतियों के आधार पर किया जाना लाभदायक होता है। सामान्य परिस्थितियों में मेंथा की अच्छी उपज के लिए 120–150 किलोग्राम नाइट्रोजन 50–60 किग्रा० फास्फोरस 40 किग्रा०पोटाश तथा 20 किग्रा० सल्फर प्रति हे० की दर से प्रयोग करना चाहिए। फास्फोरस, पोटाश तथा सल्फर की पूरी मात्रा तथा 30–35 किग्रा० नाइट्रोजन बुवाईध्रोपाई से पूर्व कूंड़ों में प्रयोग करना चाहिए। शेष नाइट्रोजन को बुवाईध्रोपाई के लगभग 45 दिन, पर 70–80 दिन पर तथा पहली कटाई के 20 दिन पश्चात् देना चाहिए।

सिंचाई एवं खरपतवार नियंत्रण–

मेंथा में सिंचाई भूमि की किस्म तापमान तथा हवाओं की तीव्रता पर निर्भर करती है। मेंथा में पहली सिंचाई बुवाईध्रोपाई के तुरन्त बाद कर देना चाहिए। इसके पश्चात् 20–25 दिन के अन्तराल पर सिंचाई करते रहना चाहिए व प्रत्येक कटाई के बाद सिंचाई करना आवश्यक है। खरपतवार नियंत्रण रसायन द्वारा खरपतवार नियंत्रण के लिए पेन्डीमेथलीन 30 ई०सी० के 3. 3 लीटर प्रति हे० को 700–800 लीटर पानी में घोलकर बुवाईध्रोपाई के पश्चात् ओट आने पर यथाशीघ्र छिड़काव करें।

फसल सुरक्षा–

दीमक

दीमक जड़ों को क्षति पहुंचाती है, फलस्वरूप जमाव पर बुरा असर पड़ता है। बाद में प्रकोप होने पर पौधें सूख जाते है। खड़ी फसल में दीमक का प्रकोप होने पर क्लोरपाइरीफास 2.5 लीटर प्रति हे० की दर से सिंचाई के पानी के साथ प्रयोग करें।

बालदार सूंड़ी–

यह पत्तियों की निचली सतह पर रहती है और पत्तियों को खाती है। जिससे तेल की प्रतिशत मात्रा कम हो जाती है। इस कीट से फसल की सुरक्षा के लिए डाइकलोर वास 500 मिली० या फेनवेलरेट 750 मिली० प्रति हे० की दर से 600–700 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें। झुन्ड में दिये गये अण्डों एवं प्रारम्भिक अवस्था में झुण्ड मे खा रही सूंड़ियों को इक्कठा कर नष्ट कर देना चाहिए। पतंगों को प्रकाश से आकर्षित कर मार देना चाहिए।

पत्ती लपेटक कीट–

इसकी सूड़ियां पत्तियों को लपेटते हुए खाती हैं। इसकी रोकथाम के लिए मोनोक्रोटोफास 36 ई०सी० 1.0 लीटर प्रति हे० की दर से 600–700 लीटर पानो में घोल बनाकर छिड़काव करें।

जड़ गलन

इस रोग में जड़े काली पड़ जाती है। जड़ों पर गुलाबी रंग के धब्बे दिखाई देते हैं। बुवाईध्रोपाई से पूर्व भूस्तारियों का शोधन 0.1ः कार्बेन्डाजिम से इस रोग का निदान हो जाता है। इसके अतिरिक्त रोगमुक्त भूस्तारियों का प्रयोग करें।

पर्णदाग

पत्तियों पर गहरे भूरे रंग के धब्बे दिखाई पड़ते हैं। इससे पत्तियां पीली पड़कर गिरने लगती हैं। इस रोग के निदान के लिए मैंकोजेब 75 डब्लू पी नामक फफूंदीनाशक की 2 किग्रा० मात्रा

600–800 लीटर में मिलाकर प्रति हे० की दर से छिड़काव करें।

कटाई

मथा फसल की कटाई प्रायः दो बार की जाती है। पहली कटाई के लगभग 100–120 दिन पर जब पौधों में कलियां आने लगे की जाती है। पौधों की कटाई जमीन की सतह से 4–5 सेमी० ऊॅचाई पर करनी चाहिए। दूसरी कटाई, पहली कटाई के लगभग 70–80 दिन पर करें। कटाई के बाद पाधों को 2–3 घन्टे तक खुली धूप में छोड़ दें तत्पश्चात् कटी फसल को छाया में हल्का सुखाकर जल्दी आसवन विधि द्वारा यंत्र से तेल निकाल लें।

उपज

दो कटाइयों में लगभग 250–300 कुन्तल शाक या 125–150 किग्रा० तेल प्रति हे० प्राप्त होता है।

महत्वपूर्ण बिन्दु–

- फास्फोरस के लिए सिंगल सुपर फास्फेट का प्रयोग करें अथवा डी०ए०पी० के साथ 200–250 किग्रा० जिप्सम प्रति हे० की दर से प्रयोग कर तेल की मात्रा बढ़ाई जा सकती है।
- जड़ों को शोधित करके ही बुवाई–रोपाई करें।